बाल साहित्य देता है बातचीत के अवसर

सबसे जरूरी है बच्चों को बाल साहित्य पढ़ने के मौके देना। इसके लिए पढ़ने की घंटी निर्धारित करना। मौखिक बातचीत एवं पुस्तकें पढ़ने से उनके लेखन में भी निखार देखने को मिलता है।

–साहबउद्दीन अंसारी

कोविड के कारण बच्चे पिछले काफी समय से टेक्स्ट से दूर हैं। उन्हें पढ़ने के लिए पुस्तकें उपलब्ध नहीं हो पाई हैं। इसकी भरपाई एकदम से नहीं की जा सकती है। बाल साहित्य को एक मजबूत विकल्प के तौर पर देख सकते हैं। पुस्तकालय में उपलब्ध बाल साहित्य को नियमित रूप से पढ़ने के लिए देना एक तरीका हो सकता है जिससे वे फिर से परिचित हो पायेंगे। इसके लिए योजनाबद्ध रूप से कार्य करना होगा। बच्चों को नियमित पढ़ने के मौके देने होंगे। अपने टाइम टेबल में पढ़ने की घंटी का निर्धारण कर बच्चों को उनके स्तर की पुस्तकें पढ़ने को दी जाएं। उन्हें विद्यालय में तो पुस्तकें दी ही जाएं इसके साथ ही घर ले जाने के लिए और उन्हें पढ़ने के लिए प्रेरित करने कि भी आवश्यकता है। इस पर बच्चों से जरूर बात हो कि वे जो पुस्तकें ले गए थे उन्हें पढ़ा या नहीं?कहां चुनौती आई और उसमें क्या मजेदार था? इससे बच्चे इन पुस्तकों को पढ़ने को प्रेरित होंगे, और उनका रुझान बढ़ेगा।

विद्यालय भ्रमण के दौरान विद्यालय में प्लास्टिक की डोरी के सहारे दीवार पर टंगी पुस्तकें सहसा अपनी ओर ध्यान आकर्षित कर रही थीं। वही बगल में एक चार्ट टंगा था जिसमें एक तरफ बच्चों के नाम एवं ऊपर पुस्तक संख्या लिखी थी। बच्चे कौन सी पुस्तकें पढ़ चुके हैं उसकी एक झलक देखने को मिल रही थी। बच्चों ने अपने द्वारा पढ़ी गई पुस्तक के आगे तिथि दर्ज कर रखी थी।

विद्यालय में पुस्तकों को रखने के लिए अलमारी तो है और उसमें बरखा सीरीज, एकलव्य प्रकाशन, जुगनू प्रकाशन, एन.बी.टी. प्रकाशन एवं अन्य पुस्तकें, पत्र पत्रिकाएं रखी हैं जिनकी संख्या 450 से अधिक है। जिन्हें समय–समय पर बदल–बदल कर बच्चों को उपलब्ध कराया जाता है। स्कूल विजिट के दौरान बाल पुस्तकालय संचालन के अनेक तरीके देखने को मिल जाते हैं। कहीं इन पुस्तकों को करीने से अलमारी में रखा जाता है, एक रजिस्टर बनाया जाता है जिसमें इन पुस्तकों के लेन–देन का ब्योरा होता है तो कहीं बिना किसी लाग–लपेट के सीधे बच्चों की पहुंच में होती हैं। इसे ऐसे ही छोड़ देने से कुछ नुकसान हो सकते हैं। लेकिन जब बच्चों को इसके लिए जिम्मेदारी दी जाती है और बात की जाती है तो नुकसान की सम्भावना कम हो जाती है। इससे इन पुस्तकों के रख–रखाव की जिम्मेदारी बच्चे खुद ही ले लेते हैं और यह सीधे उनकी पहुंच में आ जाती हैं। समय–समय पर पुस्तकों को खरीदा जाता है जिससे इनकी संख्या बढ़ रही है। जब तक पुस्तकें बच्चों की पहुंच में नहीं होंगी तब तक बच्चों में इन पुस्तकों के प्रति रुझान नहीं बन पायेगा। बच्चे पढ़ी गई पुस्तक के बारे में अपने अनुभव बताते हैं साथ ही प्रश्न भी करते हैं।

बच्चों के साथ पुस्तकों पर बातचीत जरूरी है इससे बच्चों ने कितने गहराई से पढ़ा है और क्या समझ बनी है इसका अंदाजा लग जाता है। जिन पुस्तकों को बच्चों को पढ़कर सुनाया जाता है वे उसे पढ़ने को लालायित रहते हैं। कई बार तो इन पुस्तकों को पढ़ने की इतनी होड़ होती है कि इसके लिए लॉटरी निकालनी पड़ती है। सबसे जरूरी है कि बच्चों को इसे पढ़ने के मौके देना इसके लिए पढ़ने की घंटी निर्धारित करना। विद्यालय में लंच के बाद का 30 मिनट का समय स्वतंत्र पठन के लिए निर्धारित है। बच्चे अपनी पसंद की पुस्तकें लेकर पढ़ते हैं। बच्चे जो पुस्तकें पढ़ते हैं उस पर बातचीत होती है। मौखिक बातचीत एवं पुस्तकें पढ़ने से उनके लेखन में भी निखार देखने को मिलता है।

कक्षा 1 व 2 के बच्चों ने फल से सम्बंधित पुस्तकें पढ़ी हैं। इस पर कक्षा में बातचीत शुरू की गई। उनसे पूछा गया कि तुम्हें यह कहानी क्यों पसन्द आई। इसी बीच एक बच्चे ने कहा कि हम केले की पूजा करते हैं। इस पर पूछा कि केले की पूजा करते हैं कि केले के पेड़ की? बच्चे ने बताया कि केले की पूजा करते हैं। जब हम आरती करते हैं तो केले को रखते हैं। किसकी आरती करते हैं? भगवान् की आरती करते हैं। क्या कभी आपकी भी आरती उतारी गई है? हां। तो क्या आप भगवान हो? नहीं लेकिन जब राखी बांधते हैं तब आरती उतारते हैं। कब–कब आरती उतारते हैं? जब कोई मर जाता है तब आरती उतारते हैं। नया घर बनाने पर, दुकान खुलने पर और जब बच्चा जन्म लेता है तब उनकी आरती उतारते हैं। कभी–कभी मम्मी भी आरती उतारती हैं। वह कब आरती उतारती हैं और कैसे? बच्चों ने बताया कि मम्मी डंडे से आरती उतारती हैं, जब हमसे नाराज हो जाती हैं या हम कोई गलती करते हैं तब हमारी डंडे से आरती उतारी जाती है। ज्यादातर बच्चों ने इस अनुभव को साझा किया। बच्चे डंडे से आरती उतारने वाली बात पर हंस दिए। आगे पूछा गया कि जब हम गलती करते हैं तो मम्मी डंडे से आरती उतारती हैं तो क्या भगवान भी गलती करते हैं? नहीं पर बड़े कहते हैं कि जब हम मंदिर में जाते हैं तो हमें शोर नहीं मचाना चाहिए नहीं तो भगवान नाराज हो जाते हैं। इस पर एक बच्चे ने कहा कि मम्मी हमें मार सकती हैं क्योंकि उनके अन्दर ममता होती है। इस पर बात करने पर और समझ में आया कि मम्मी प्यार भी तो करती है तो वह मार भी सकती है।

जब तक पुस्तकें बच्चों की पहुंच में नहीं होंगी तब तक बच्चों में इन पुस्तकों के प्रति रुझान नहीं बन पायेगा। बच्चे पढ़ी गई पुस्तक के बारे में अपने अनुभव बताते हैं साथ ही प्रश्न भी करते हैं। बच्चों के साथ पुस्तकों पर बातचीत जरूरी है इससे बच्चों ने कितने गहराई से पढ़ा है और क्या समझ बनी है इसका अंदाजा लग जाता है।

इस चर्चा को आगे बढ़ाया गया और पूछा कि क्या फलों से सम्बंधित कोई दूसरी कहानी पढ़ी है या सुनी है? इस पर बच्चों ने बताया कि उन्होंने "पका आम" कहानी सुनी है और पढ़ी भी है। इस कहानी पर थोड़ी बात की गई। बच्चों ने अपने अनुभव रखते हुए कहा कि उन्हें आम पसंद है। इस पर शुरू में आम का रंग और पकने पर उसका रंग क्यों बदल जाता है इस पर बात की गई। बच्चों से पूछा कि आम कैसे पकता होगा? बच्चों ने अपने–अपने अनुभव् रखते हुए कहा कि बारिश, धूप, गर्मी, पानी से आम पकता है। एक बच्चे ने कहा कि केले को कार्बेट से पकाते हैं, आम को भी पकाते हैं। आम को पकाने के लिए और क्या करते हैं? इस पर बच्चे ने बताया कि आम को भूसे में रखने से भी पक जाता है। इस पर और बात करते हुए प्रश्न पूछे जिससे बच्चे यह निकाल कर लायें कि आम को पकाने के लिए कार्बेट का उपयोग करते हैं उसमें से गैस निकलती है जो आम को पकाती है।

कहानी "छुपन छुपाई" पढ़कर सुनाई, उसके बाद एक सवाल पूछा गया कि जब आप विद्यालय से घर जाते हो और मम्मी नहीं दिखाई देती है तब वे उन्हें कहां–कहां ढूंढते हैं। उन्हें ढूंढने के लिए वे घर, पड़ोस और चाचा के घर जाते हैं। कहानी को हाव–भाव के साथ ही बीच–बीच में प्रश्न भी पूछती हैं। कहानी के अंत में उन्होंने पूछा कि कहानी में मम्मी को ढूंढने के लिए किरण ने कहां–कहां देखा? बच्चों ने कहानी के क्रम के अनुसार बताया जिसमें किचन, बेडरूम, बाथरूम, फ्रिज आदि। फिर मैडम ने कहा जिस प्रकार इस कहानी में मां ने किरण को झप्पी दी क्या आपकी मम्मी भी झप्पी देती हैं और कब? इस प्रश्न के जवाब बहुत ही रुचिकर थे और सभी बच्चों ने इसके जवाब दिए। कक्षा 4–5 के बच्चे इसके जवाब तो दे ही रहे थे परन्तु कक्षा 2–3 के बच्चों ने बहुत सुन्दर जवाब दिए। कुछ ने कहा कि जब हम उनका हाथ बंटाते हैं, मदद

करने पर, झाड़ू लगाने पर, बर्तन धोने पर झप्पी देती हैं। छोटे बच्चों ने बताया कि जब मम्मी का मूड़ (सर) दबाते हैं, पैर दबाते हैं तब मम्मी झप्पी देती हैं। जब मम्मी बीमार होती हैं और उनकी देखभाल करते हैं पानी लाकर देते हैं तब झप्पी देती हैं। जब मम्मी मामा के घर से आती है तब झप्पी देती हैं।

इस पूरी बातचीत से हम देखें तो बच्चे अपने घर की भाषा का उपयोग कर रहे थे जैसे मूड़ (सर), लौंडा (लड़का) आदि इन शब्दों को ऐसे ही स्वीकार किया। और उसके बोलने पर कोई रोक नहीं लगाईं और न ही उसे सुधारने का प्रयास किया। इसलिए बच्चे खुशी–खुशी अपनी बात को रख रहे थे। हम सार्थक सन्दर्भ की बात करते हैं और कहते हैं कि मौखिक भाषा के विकास के लिए बच्चों के अनुभवों से जुडाव होना चाहिए। बच्चों के साथ बातचीत में यह बात साफ–साफ देखने को मिलती है।

अक्सर बच्चों की आपसी बातचीत को ही बातचीत मानते हैं। इसको कक्षा में कम स्थान देते हैं। साथ ही यह भी लगता है कि छोटे बच्चों के साथ क्या बात की जाय, कितनी देर बात की जाय आदि। परन्तु शिक्षाविद कहते हैं कि बच्चों के साथ सार्थक सन्दर्भों में बात करनी चाहिए। हमें क्या बात करनी है? इसकी एक लिखित योजना हो तो बातचीत को दिशा देने में मदद होती है और भटकाव कम हो जाता है। यदि चर्चा इधर–उधर हो भी जाय तो फिर से हम मूल मुद्दे पर आ जाते हैं। कविता कहानी पर काम करते समय बहुत से प्रश्न और मुद्दे हमें मिल ही जाते हैं जिन पर बच्चों के साथ सार्थक बातचीत किया जा सकता है। हम जिन कहानियों पर काम करना चाह रहे हैं उसे पहले से पढ़ लें और उसमें क्या प्रश्न पूछे जा सकते हैं? किस तरह के प्रश्न स्वाभाविक रूप से किये जा सकते हैं वह समझ में आ जाता है। कहानी सुनाते समय कहां रुकना है, क्या प्रश्न करना है? यह हमें पता चल जाता है। बच्चों के साथ कितनी बात की जाय, कितना उन्हें कल्पना करने के मौके दिए जाय और किस स्तर पर किया जाय? यह अपने आप में प्रश्न है। परन्तु बच्चों के साथ जिनकी आयु 6–7 वर्ष है उनके साथ और किस इस तरह के प्रश्न किये जा सकते हैं? लिपि ज्ञान, सार्थक सन्दर्भ में बच्चों के साथ बातचीत एवं रीडिंग कॉर्नर, टेक्स्ट का एक्सपोजर देने की आवश्यकता है। बच्चों में पढ़ने के प्रति उत्साह जगाने के लिए उन्हें उनके स्तर के अनुसार कहानी की पुस्तकें उपलब्ध करवाने से वे अनुमान लगाकर पढ़ने की ओर अग्रसर होने लगते हैं। सभी कक्षा के बच्चों को कहानी की पुस्तकें पढ़ने को मिलें जिससे बच्चे टेक्स्ट के संपर्क में रहे और वे चित्र देखकर, कुछ शब्दों, वाक्यों को अनुमान लगाकर पढ़ सकें। पढ़ी हुई कहानी को अपने शब्दों में बता पायें और कुछ लिखित रूप में भी अभिव्यक्त कर पायें। बच्चों के साथ बातचीत का उनके लेखन में भी दिखाई देता है।

तनिशा, कक्षा–5, राजकीय प्राथमिक विद्यालय जीवनगढ़ विकासनगर, देहरादून

इस प्रक्रिया में प्लानिंग का होना महत्वपूर्ण है। हमें यह पता होता है कि कौन बच्चा किस स्तर पर है और उनके साथ क्या किये जाने की जरूरत है? जो बच्चे पढ़ने–लिखने में कमजोर होते हैं उनके साथ अलग से समय देना आवश्यक है। जब बच्चे कहानी पढ़ रहे हों उस समय ऐसे बच्चों को अपने पास बैठकर उन्हें पढ़ने के लिए कहना। इससे बच्चे को अलग से समय मिल जाता है और शिक्षक ऐसे बच्चों को मदद भी कर रहे होते हैं। इन बच्चों के लिए छोटी एवं उनके स्तर की कहानी का चयन करना होता है जिससे बच्चे उसे पढ़कर समझ सकें और उन्हें आनंद आये। एक बार उन्हें पढ़ने का चस्का लग जाए और आनंद आने लगे तो वे अन्य पुस्तकों को भी अनुमान लगा कर पढ़ने लगते हैं। यह हम सभी ने महसूस भी किया होगा कि जब बच्चे पढ़ने की प्रक्रिया में शामिल होते हैं तो वे अपने साथियों से पूछते भी हैं। कुछ बच्चे दूसरे के द्वारा पढ़ी जा रही कहानी को सुनते हैं। जब उन्हें मौका मिलता है वे उस कहानी को पढ़ना चाहते हैं और पढ़ते हैं।

(लेखक अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड से जुड़े हैं)